International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(IV), January - March, 2024, pp. 125-127

राष्ट्रवाद और भारतीय विचारक

राजीव यादव*

प्रस्तावना

राष्ट्र शब्द अपनी उत्पति लैटिन शब्द नसकि (Nasci) से प्राप्त की है, जिसका तात्पर्य है पेदा होना ओर इसका अर्थ है लोगों का एक समूह जो समान जगह पर पैदा हुआ है।

मध्य युग के अंत के यूरोपीय विश्वविद्यालय में नेशनस् वो छात्र थे जो एक समान क्षेत्र या देश से आते थे, जबकि 19 वीं सदी के फ्रांसिसी उग्र लेखकों के लिए नेशनस, किसी दिए (Nations) किसी दिए गए देश के लोग हैं हालांकि अंग्रेजी और दूसरी भाषाओं में प्रचलित उपयोग में ''राष्ट्र'' या तो एक राजय या इसके निवासियों का पर्यायवाची समझा जाता है या फिर एक सामान्य एकता द्वारा बंधे एक मानव समूह को दर्शाता है हालांकि राष्ट्र एक सामान्य एकता से अधिक है। यह देश ओर इसके निवासियों के लिए भावना क्रिया, प्यार और त्याग के लिए एकता है, यह एक सामूहिक पहचान होने व बनने के लिए एकता हैः यह इसके साथ साथ दूसरों के विरूद्ध एकता के लिए आग्रह के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार, राष्ट्र की पहचान को उजागर करने के लिए विभिन्न सिद्धांत विकसित हुए हैं।

भारत में राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्रवाद अर्वाचीन तथ्य है। ब्रिटिश शासन और विश्व शक्तियों के कारण तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित अनेक भावनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ कारकों की क्रिया प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ब्रिटिश काल मं भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ। भारत में राष्ट्रीयता के विकास की प्रक्रिया बड़ी जटिल और बहुमुखी है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, राजनीतिक संगठनो, विचारकों क्रांतिकारों को मिलाकर किए गए कुछ ऐसे आंदोलन थे जिनका एक ही लक्ष्य था भारतीय ईस्ट इंडिया कंपनी को जड़ से उखाड़ फेंकना।

पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति ने राष्टवादी भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। पढ़े लिखे भारतीयों को बर्क, मिल, ग्लैडस्टोन वाइट, मैकाले जेसे लोगों को सुनने का अवसर मिला जिससे भारतीयों में राष्ट्रवादी भावनाओं ने जन्म लिया अनेक धार्मिक तथा समाजसुधारकों जेसे राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्या सागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती रामकृष्ण परमहंस, तिलक, गांधी अरबिन्दो, नेहरू, एम.एन. रॉय ने भारतीयों में राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

तिलक के अनुसार राष्ट्रवाद

तिलक का राष्ट्रवाद अंशतया पुनरूत्थानवादी और पुनर्निमाणवादी था। उन्होंने वेदों तथा गीता से आध्यात्मिक शक्ति एवं राष्ट्रीय उत्साह ग्रहण करने का सन्देश दिया ओर बतलाया कि भारत को प्राचीन परम्पराओं के आधार पर ही आज के भारत के लिए स्वस्थ राष्ट्रवाद की स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रसंग में अपने विचार व्यक्त करते हुए 'मराठा' में उन्होंने लिखा, ''सच्चा राष्ट्रवाद पुरानी नींव पर ही निर्माण करना चाहता है। जो सुधार पुरातन के प्रतिघोर असम्मान की भावना पर आधारित है उसे सच्चा राष्ट्रवादी रचनात्मक कार्य नहीं समझता। हम अपनी संस्थाओं को ब्रिटिश ढांचे में नहीं ढालना चाहते, सामाजिक तथा राजनीतिक सुधार के नाम पर हम उनका अराष्ट्रयकरण नहीं करना चाहते''।

* विद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान।

तिलक ने भारतीयों में यक भावना उत्पन्न करने का अथक प्रयास कि उन्हें गीता और वेदों के महान सन्देशों में नई शक्ति और नई चेतना ग्रहण करना चाहिए। ऐसा करने पर ही भारत वह आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर सकेगा जिसके बल पर ब्रिटिश नौकरशाही से टक्कर लेकर स्वराजय प्राप्त किया जा सकेगा।

राष्ट्रवाद एक आध्यात्मिक ओर मनोवैज्ञानिक धारणा है। तिलक की मान्यता थी कि जो राष्ट्रवाद राष्ट्रीय एकता पर आधारित होता है वही सच्चा और स्वस्थ राष्ट्रवाद हैं

तिलक ने भारत में एकता की प्रस्थापना का मार्ग बतलाते हुए कहा कि भारत में विद्यमान विभिन्न पंथ वैदिक धर्म की शाखाएं, प्रशाखाएं है।

दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रवाद पर विचार

दयानन्द पारिभाषिक अर्थ में न तो राजनीतिक दार्शनिक थे और न ही प्रत्यक्ष रूप में भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के साथ जुड़े हुए थे उन्होंने अपने चिंतन और कार्यों से स्वाधीनता की नैतिक तथा बौद्धिक नीव तैयार की। सरस्वती हिन्दू पुनरूत्थानवाद के आक्रामक समर्थक थें उनका विचार था कि ''किसी विदेशी पंथ को अंगीकार कर लेने से राष्ट्रीय भावना, जिसका वे पोषण करना चाहते थे, संकट में पड़ जायेगी।'' मुल्लाओं और पादरियों ने पहली बार यह अनुभव किया कि उनके विश्वास के बिना किसी संकोच के आलोचना हो सकती है। दयानन्द सरस्वती ने अन्धविश्वासों और परम्परावाद के विरूद्ध संघर्ष में भी उन्होंने ''आक्रामक योद्धा'' की भूमिका अपनायी। उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि भारत के अंग्रेज शासको की ''सामाजिक क्षमता अधिक श्रेष्ठ है, सामाजिक संस्थाएं अच्छी है ओर उनमें आत्मोत्सर्ग, सार्वजनिक हित की भावना, साहस, सता के प्रति आज्ञापालन के भाव और देशभक्ति है।

गांधी जी की राष्ट्रवाद पर विचार

गांधी जी राष्ट्रवाद के समर्थक थे गांधीजी का कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति के अपने देश के प्रति कुछ विशेष कर्तव्य होते है। गांधी जी एक महान राष्ट्रवादी थे। गांधी जी उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक नहीं थे। वे एक रचनात्मक और मानवतावादी राष्ट्रीयता के उपासक थे जिसके आधार पर अन्तरर्राष्ट्रीय के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। भारत की स्वधीनता संग्राम के नेतृत्व में भी राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता की यह अन्योन्याश्रिता ही महात्मा गांधी का मार्गदर्शक रही। उन्होंने राष्ट्रवाद को कभी भी संकीर्ण अर्थों में ग्रहण नहीं किया गांधीजी ने यंग इंडिया में लिखा कि में भारतवर्ष का उत्थान इसलिए चाहता हूं कि जिससे सम्पूर्ण विश्व का हित हो सके। ''मैं भारत वर्ष का उत्थान दूसरे राष्ट्र के विनाश पर नहीं चाहता। मैं उस राष्ट्रभक्ति की निन्दा करता हूं जो हमे दूसरों के शोषण तथा मुसीबतों से लाभ उठाने के लिए उत्साहित करती है।''

नेहरू का राष्ट्रवाद पर विचार

नेहरू जी भी राष्ट्रवादी थे उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रवादी हूं और राष्ट्रवादी होने पर मुझे गर्व है। नेहरू जी का राष्ट्रवाद साम्राज्यवाद से मुक्ति और देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष की प्रेरणा देता है। उन्होंने राष्ट्रवाद को संघर्षों की अनुभूति कहा है। जब कभी कोई आपत्ति आती है। उन्होंने और राष्ट्रीय रंगमन्च पर छा जाता है। अपनी पुस्तक डिस्कवरी ऑफ इंडिया में लिखते है कि ''किसी भी पराधीन देश के लिए राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्रधान आकांक्षा होनी चाहिए भारत के लिए जिसके पास एक अतीत की धरोहर है। नेहरू भारत में भावनात्मक दृष्टि से राष्ट्र की संज्ञा देते हैं। नेहरू के अनुसार राष्ट्रवाद स्वतन्त्रता का प्रेरणा स्त्रोत है। नेहरू जी उदार राष्ट्रवाद के समर्थक थे। इनका राष्ट्रवाद उग्र राष्ट्रवाद नहीं था। वे एक उदार राष्ट्रवादी थे। वे उग्र राष्ट्रवाद के आलोचक थे। वे कहते थे कि राष्ट्रवाद अपनी जगह अच्छा है।

एम.एन. राय के राष्ट्रवाद पर विचार

रॉय ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ भारत की स्वतंत्रता के लिए सक्रिय क्रान्तिकारी के रूप में किया था। अतः यह कहा जा सकता है कि सन, 1915–16 तक राष्ट्रवाद में उनकी गहरी आस्था थी। वस्तुतः इस समय तक राष्ट्रवाद उनके जीवन का एकमात्र मार्गदर्शक सिद्धान्त था। राष्ट्रवाद को एक प्रतिक्रियावादी

प्रवृत्ति बतलाते हुए प्रत्येक समाज और देश को इससे बचने का सन्देश दिया। राय ने अपने मौलिक मानववाद के प्रतिमान में इस बात पर बल दिया कि राष्ट्रवाद मनुष्य को संकीर्ण सीमाओं में आबद्ध कर उसके संपूर्ण दृष्टिकोण को स्वार्थपूर्ण बना देता है। इसी आधार पर वे मानव मात्र का राष्ट्रवाद की सीमाओं से उपर उठने के लिए आह्वान करते हैं। रॉय कहते है कि राष्ट्रवाद भावुकता पर आधारित होने के कारण किसी भी वैज्ञानिक राजनीति चिंतन का आधारित नहीं बन सकता। रॉय ने न केवल सैद्धांतिक रूप में राष्ट्रवाद की धारणा का विरोध किया वरन व्यवहार में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति भी विरोध भाव ही अपनाया था।

विवेकानन्द के राष्ट्रवाद संबंधी विचार.

हीगल की भांति विवेकानन्द का भी विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र का जीवन किसी एक प्रमुख तत्व की अभिव्यक्ति है। उनकी दृष्टि में धर्म भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण नियामक के सिद्धांत रहा है। विवेकानन्द के शब्दों में, ''जिस प्रकार संगीत में एक प्रमुख स्वर होता है वैसे ही हर राष्ट्र के जीवन में एक प्रधान तत्व हुआ करता है। अन्य सब तत्व उसी में केन्द्रीत होते हैं। भारत का तत्व है धर्म''। इसलिए उन्होंने राष्ट्रवाद के एक धार्मिक सिद्धांत की नींव का निर्माण करने के लिए कार्य किया। आगे चलकर उसी सिद्धांत का विपिनचन्द्र पाल तथा अरबिन्दों ने पक्षपोषण किया।

विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद के धार्मिक विद्धान्त का प्रतिपादन इसलिए किया कि वे समझते थे कि आगे चलकर धर्म ही भारत के राष्ट्रीय जीवन का मेरुदंड बनेगा। उनका कहना था कि राष्ट्र की भावी महानता का निर्माण उसके अतीत की महत्ता की नींव पर ही किया जा सकता है। अतीत की उपेक्षा करना राष्ट्र के जीवन को ही निषेध करने के समान है इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का निर्माण अतीत की ऐतिहासिक विरासत की सुदृढ़ नींव पर ही करना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- Bhargava, R 1998 secularism and its critics, Oxford University Press New Delhi

2. चौबे, शिवानी किंकरः भारत मं उपनिवेशवाद स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद और ग्रंथ शिल्प, नई दिल्ली

3. वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन पृष्ठ 198

4. राम गोपाल : लोकमान्य तिलक पृष्ठ 117, 118

5. यंग इंडिया –4 ।चतपस 1929 का अंक

6. नेहरूः व्यक्ति और विचार पृष्ठ 494

7. नेहरू, जवाहरलालः विश्व इतिहास की झलक पृष्ठ 4341

8- Roy, Allen and Roy, S.N.: in mean on image page ,245

9. आदिश्वरनन्दः स्वामी विवेकानंद ए वर्ल्ड टीचर वरमेंट प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

10. किशोर, B.R.: स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण मिशन, कलकता 1977

❖◆❖